Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-353-358

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-353-358
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

वर्षा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
नव नालंदा महाविहार, नालंदा.

Corresponding Author :

वर्षा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
नव नालंदा महाविहार, नालंदा.

धूमिल की कविता में स्त्री संवेदना

शोध सार : धूमिल साठोत्तरी कविता के उत्कृष्टतम कवि माने जाते हैं। साठोत्तरी कविता में कवि धूमिल की रचना-धर्मिता की पहचान, नयी कविता-धारा में एक अहम भूमिका रखती है। इन सभी दृष्टिकोणों से उनकी कविता-संग्रह 'संसद से सड़क तक' विचार-कविता की मुख्य धारा के मध्य द्वीपों में एक द्वीप है। जब से यह संग्रह प्रकाशित हुयी, तभी से विभिन्न दृष्टियों से संकलित कविताएं विचार-चर्चा का केन्द्र बनी और आज तक बनी हुयी है।

कवि धूमिल पर एक आरोप यह भी लगता है कि वे स्त्रियों को देह तक हीं सीमित रखते हैं। उनकी कविताओं में आए कुछ शब्द जैसे- गर्भाधान, गर्भपात, गभना इन शब्दों को लेकर धूमिल के उपर स्त्रियों के प्रति एक हेय दृष्टि रखने का आरोप लगता आया है। पर ऐसा कहना असंगत होगा, क्योंकि वे जवाहर लाल नेहर के मृत्यू पर शोक भी मनाते हैं एवं बाद में उनकी भर्त्सना भी करते हैं। उनकी कविता में जनतन्त्र के प्रति आस्था लेकर नक्सलवादी राजनीतिक चेतना का समर्थन है। यह धूमिल के अन्तर्विरोध का नहीं उनके युगधर्मी होने का साक्ष्य है। इसलिए जवाहरलाल नेहरु की मृत्यू पर उनकी शोक संवेदना इसलिए झूठी नहीं हो पाती कि वे बाद में नक्सलवाद की ओर झुक जाते हैं। धूमिल अभिजात्य संस्कार वाले लेखकों से भिन्न पृष्ठभूमि से आए थे। वे ऐसे गाँव से आए थे जहाँ परिवर्तन के प्रति एक भयावह उदासीनता थी। वे उस परिवार से आए थे जो भूख एवं गरीबी की निहितार्थ समझता था। वे उस देश से आए थे जहाँ भदेस होना कोई गाली नहीं थी। इसी समझ के तहत वे सभी से टकराते हैं। वे सब को उस समय की यथास्थितिवादी मनोवृति से कुढ़कर अपनी अभिव्यक्ति को सीधे-सपाट तौर पर रखते हैं।

कवि धूमिल भले हीं अपनी पाठक-मन को समझाने के लिए स्त्री के यौनांगो को लिया है किन्तु सत्य तो ये है कि ये फरेब को हर स्तर से लताड़े हैं, चाहे वह शहरी नारी की नजाकत और कोमल आकर्षक

भावमुद्रा ही क्यों न हो। ऐसा करते हुए कहीं भी बेईमान होते दिखाई नहीं देता है। क्योंकि धूमिल की कविताओं में कहीं 'काम' की वकालत या रोमानी पक्षधरता नहीं है। इनकी कविताओं में आयी औरत प्रसंगों में तो कामुकता के प्रति गहरी वितृष्णा ही अभिव्यंजित होती है। धूमिल की कई कविताओं में स्त्री के प्रति संवेदना दिखाई पड़ती है।

कुंजी शब्द- स्त्री, कविता, स्त्रियों, संघर्ष, समाज, रूढ़, पितृसत्ता।

कवि धूमिल की अगर हम पूरे व्यक्तित्व का आकलन करें तो हमें यह कहना अतिश्योक्ति नहीं लगता है कि-

"उक्ति, 'क्वचित् प्रज्जवलितं श्रेयः न च धूमायित चिरम्"

अर्थात् (थोड़ी देर का प्रज्जवलित होना, अधिक श्रेयस्कर है, देर तक धूँधियाते रहने से।) अपने थोड़े से जीवन में धूमिल ने साहित्यिक स्लेट पर अपनी कृतित्व की जो रेखा खींची है, उसकी छाप काफी गहरी है। ऐसा माना जाता है कि आदमी का व्यक्तित्व उसकी परीस्थितियाँ बनाती है। जैसी परीस्थितियाँ उत्पन्न होती है वैसे हीं व्यक्तित्व का गढ़ावपन होता जाता है। अगर ज्यादा आभाव से व्यक्तित्व गुजरता है तो ऐसी स्थिति में मानसिकता, अपराधवृत्ति का केन्द्र भी बन सकती है और दूसरी संवेदना से जुड़कर, अपराध होने एवं अपराध करनेवाले शोषक के प्रति या पीड़ा वर्ग का खुल्लम-खुल्ला पर्दाफाश करके, लोगों के बीच अपराध का प्रतिरोध करनेवाली मानसिकता को जागृत कर सकती है। धूमिल, शोषण के प्रतिरोध की उक्त संवेदना के कारण हीं कवि धूमिल बने हैं। वे इस संसार में लगभग 39 वर्ष ही जीवित रह सके लेकिन अपनी अल्पायु जीवनकाल में उन्होंने संघर्ष या प्रतिरोध का जो मानसिक बिंब अपनी रचनाओं में दिखाया है वह जितना सख्त जान पड़ता है उतना ही मार्मिक भी है।

धूमिल साठोत्तरी पीढ़ी के महत्वपूर्ण कवि हैं। वह समय हिन्दी कविता में देखा जाय तो आंदोलन का समय था, विचार आन्दोलन का। इस अर्थ में उनकी कविता, आन्दोलन की कविता है, क्योंकी धूमिल की कविता पढ़कर पाठक-मन आन्दोलित हुए बिना नहीं रह सकता। कारण यह है कि धूमिल की कविता में संवेदना संवेग भी है और विचार की गहनता भी है। वहां अनुभूति और विचार, अहसास और समझ दोनों एक-दूसरे से इतने घूले-मिले हैं कि उनकी कविता भावात्मकता और बौद्धिकता दोंनो हीं स्तरों पर आन्दोलित करती है। पाठक को बार-बार यह लगता है कि बनी हुई अवधारणाओं पर पुनर्विचार करना कितना आवश्यक हो गया है।

धूमिल की रचनाएँ ऐसी खुली पुस्तक की तरह है, जिनमें हमारे आसपास जितने भी व्याप्त अभिशाप है वे स्वयं मुखर जाते हैं। धूमिल की कविता में विसंगतियों का जैसा संगत और सटीक चित्रण हुआ है, वह यथार्थ चित्रण उनकी क्षमता को अभिव्यंजित करता है। प्रस्तुत उदाहरण में अगर हम देखें तो स्थितियां हमें स्वयं बोलती नजर आ रही है-

"वर्ना तुम कर भी क्या कर सकते हो,
यदि पड़ोस की महिला का एक बटन
तुम्हारी बीबी के ब्लाउज से(कीमत में) बड़ा है
और प्यार करने से पहले
तुम्हें पेट की आग से होकर गुजरना पड़ा है।"[1]

धूमिल की कविता पर एक आरोप यह लगाया जाता है कि उसमें यौन प्रतीकों, स्त्री शरीरांगों अथवा मुद्राओं का इतना भाषिक उपयोग किया गया है, जो काव्यो-चित नहीं जान पड़ता। पर सच तो यह है कि धूमिल ने हर स्तर पर फरेब को लताड़ा है, चाहे वह शहरी नारी की नजाकत और कोमल-आकर्षक भावमुद्रा हीं क्यों न हो। ऐसा करते हुए कहीं भी उनका मन बेईमान होता नहीं दिखाई पड़ता क्योंकि धूमिल की कविता में कहीं 'काम' की वकालत या रोमानी पक्षधरता नहीं हैं। इनकी कविताओं में आए स्त्री-प्रसंगों में देखा जाय तो कामुकता के प्रति गहरी वितृष्णा हीं प्रकटित होती है। एक उदाहरण से यह द्रष्टा हो जाता है कि 'इच्छाओं' के लोकतंत्र में नंगी हुई 'औरत' में, औरत की विवशता ही है, जो उसे चमड़े का सिक्का चलाने वालों की अतिवादिता को मुखर करता है-

"चमड़े को गाने दो प्यार
यौवन अराजक तत्वों से बनता है।
भाषा की तंगी में लगभग
नंगी होती हुई औरत ने कहा-
इच्छाओं के लोकतंत्र में हम
चमड़े का सिक्का चलाएंगे।"[2]

स्त्री की दारुण स्थितियों को भी धूमिल ने संवेदनापूर्ण उभारा है। एक तरफ वो स्त्रियों के कामुकता व ईच्छा को दर्शाते हैं तो वहीं दूसरी तरफ उनकी स्थितियों पर भाव-विभोर होकर उससे मुक्ति का मार्ग भी बतलाते हैं। वो स्त्री को रोने, कसटने की बात नहीं करते बल्कि उसकी प्रति स्थितियों को देखते, समझते हुए उससे सवाल कर उसे समाज की प्रचलित परीस्थितियों से सशक्त करते हुए नज़र आते हैं। वे औरत को 'बदनसीब औरत' कहकर उसकी स्थितियों से रूबरू करवाते हैं। उदाहरण स्वरूप हम देख सकते हैं कि धूमिल ने किस तरह से स्त्री के प्रति संवेदित होते हुए समाज व्यवस्था के कठघरे में कैद स्त्री को सशक्त करते हुए नजर आते हैं-

"क्यों रोती है बदनसीब औरत !
क्या तु नहीं जानती कि.....
भाषा बलात्कार बालिग होती है।"[3]

औरत का जो भयावह बिम्ब उनकी रचनाओं में देखने को मिलता हैं, वह बहुत कुछ लोगों की स्त्रियों के प्रति जो मानसिकता है उससे मुक्ति दिलाने के लिए है।

पितृसत्तात्मक समाज में सदियों से स्त्रियों पर पुरुषों का वर्चस्व रहा है उसकी अमिट छाया अभ्यांतर में आज भी स्वयं महिलाओं के बीच बनी हुई है। चाहे वह ग्रामिण महिला हो या शहरी महिला स्वयं को पुरुष से कमतर आंकना उसकी प्रकृति बनी हुयी है। कुछ महिलायें ऐसी हैं जो अपनी समझ की शोधक दृष्टिकोण इस से स्वयं को संसार में समप्राप्ति का भाव रखे अपने जीवनरुपी वाहन को गन्तव्यता की ओर अग्रसर कर रही है। धूमिल भी स्त्रियों से यही उपेक्षा रखते हैं कि वो पहले अपने अस्तित्व को समझे फिर समाज की जो रुढ़ व्यवस्था है उसे तोड़कर बाहर निकले।

उदाहरण के लिए 'उस औरत की बगल में लेटकर' शीर्षक नामक जो कविता है वह रुढ़ मानसिकता को आकर्षण देता है और वह मानव मन की जटिलताओं को भी नये सिरे से समझने के लिए, प्रेरित करता है-

"मैंने पहली बार महसूस किया है
कि नंगापन अन्धा होने के खिलाफ
एक सख्त कार्यवाही है
उस औरत की बगल में लेटकर
मुझे लगा कि नफरत और मोमबतियां जहां बेकार
साबित हो चुकी हैं और पिघले हुए
शब्दों की परछाई
किसी खौफनाक जानवर के चेहरे में
बदल गई हैं मेरी कविताएँ
अंधेरा और कीचड़ और गोश्त की खुराक पर जिन्दा है"[4]

इनकी रचना में 'स्त्री' के आसपास जो पड़ोस है, जो परिवेश है उसकी नीयत समझने एवं स्त्री के 'नंगेपन' को 'अंधेपन'

का प्रतिरोध मानने की व्यंजना है। 'औरत' रसोईघर के अभावों एवं छोटी-छोटी सुविधाओं के मुहैया न हो पाने का नाम भी है। इन पंक्तियों से यह द्रष्टव्य हो जाता है-

"मैंने महसूस किया है कि घर
छोटी-छोटी सुविधाओं की लानत से बना है,
मेरे पड़ोसियों के सारे दांत टूट गए हैं,
उनकी जांघों की हरकत/पाला लगी मटर की तरह
मुर्झा गयी है/उनकी आंखों की सेहत
दीवार खा गयी है।"[5]

कई आलोचकों लेखकों का मानना है कि धूमिल की कविताओं में धूमिल की स्त्रियों के प्रति व्याप्त धार स्त्री विरोधी चेतना को दर्शाता है।

'संसद से सड़क तक' नामक प्रसिद्ध कविता संग्रह की पहली कविता 'कविता' नामक शीर्षक में धूमिल लिखते हैं कि-

"एक सम्पूर्ण स्त्री होने के पहले हीं
गर्भाधान की क्रिया से गुजरते हुए
उसने जाना कि प्यार घनी आबादीवाली बस्तियों में
मकान की तलाश है
लगातार बारिश में भीगते हुए
उसने जाना कि हर लड़की
तीसरे गर्भपात के बाद
धर्मशाला हो जाती और कविता
हर तीसरे पाठ के बाद।"[6]

धूमिल पाठक मन को इस बात से रुबरु करवाना चाहते हैं कि ये जो नया युग है, जहाँ लोकतंत्र, संसद किसी भी चीज का मूल्य नहीं है। इस दौर का मनुष्य मूल्यविहीन हो चुका है और जो मूल्यविहीन होना चाहिए था वह मूल्यवान हो चुका है ठीक इसी प्रकार कविता की भी हालात बदल चुकी है और कवि भी परंपरागत लीक से कटे हुए नए कवि है जिनकी सोंच नयी है और जो हर एक चीज को अस्वीकार कर रहे हैं। इस बदले हुए तेवर को समझाने के लिए धूमिल ने स्त्री के यौनांग को लिया है और खासकर 'गर्भाधान' तथा गर्भपात जैसे शब्दों का प्रयोग कर धूमिल स्त्री की उपादेयता को सिर्फ देह तक सीमित नहीं मानते हैं बल्कि सच तो ये है कि धूमिल ने हर प्रकार से फरेब को निर्भिकता पूर्वक कड़े शब्दो में लताड़ने का अदम्य साहस किया है। हां ये अलग बात है कि धूमिल स्त्रियों के यौनांग को अपनी कविता में शामिल किया है पर यह कहना असंगत होगा कि कवि स्त्रियों के यौनांग शब्दों को लेते हुए वे स्त्रियों के देह तक ही सीमित हैं। धूमिल की एक और कविता 'आतिश के अनार-सी वह लड़की' में धूमिल ने लिखा है-

"ओह! जैसा मैने पहले कहा है-
बीस सेबों की मिठास से भरा हुआ यौवन
जब फटता है तो न सिर्फ टैंक टूटते हैं
बल्कि खून के छींटे जहाँ-तहाँ पड़ते हैं
बंजर और परती पर आजादी के कल्ले फूटते हैं
और ओ जारी लड़की !

कल तु जहां आतिश के अनार की तरह फूटकर
बिखर गयी है ठीक वहीं से हम
आजादी की वर्षगांठ का जश्न शुरु करते हैं।"[7]

धूमिल ने यह कविता कुमारी रोशन आरा बेगम की कुर्बानी से अभिभूत होकर लिखा था। कुमारी रोशन आरा बेगम ने स्वयं को आततायी टैंक के नीचे बम के साथ डाल लिया था। इनकी साहस से प्रभावित होकर धूमिल ने- 'आतिश के अनार-सी वह लड़की' नामक कविता लिखा। धूमिल एक तरफ नारियों के यौनांग शब्दों को अपनी कविता में रखकर स्त्रियों के उस समय की दारुण स्थितियों को दर्शाते हैं तो वहीं दूसरी तरफ स्त्रियों के सम्मान में'आतिश के अनार-सी वह लड़की, कहकर उसे आग की उपमा भी देते नजर आते हैं। वे कहना चाहते हैं कि स्त्री अगर सेबों जैसा मिठास से भरा हुआ यौवन हो सकती है किंतु तुम्हारे जुर्म व शोषण के खिलाफ अगर फट गई तो सिर्फ वो हीं नहीं मरेगी, उसमें तुम भी मारे जाओगे और उसके खून के छींटे आने वाले समय के कोने-कोने तक पड़ेगा। अर्थात् स्त्री कोमल और मधुर व्यवहार की खान है तो वहीं स्त्री अगर जरूरत पड़ जाए तो आग का गोला भी बन सकती है।

धूमिल की एक कविता 'पत्नी के लिए' शीर्षक नामक कविता में स्त्री के लिए जो संवेदना फुटती नजर आ रही है। एक उदाहरण देखिए -

"तुम्हारा चेहरा जैसे कविता की जमीन है,
तुम एक सुन्दर और सार्थक कविता हो मेरे लिए।"[8]

धूमिल स्त्रियों के प्रति काफी संवेदनशील रहे हैं। वे समाज के हर उस दृष्टिकोण से रुबरु करवाते नजर आते हैं जो उस समय और आज भी व्याप्त है। समाज की सभी स्त्रियां एक जैसी नहीं हो सकती है। इसमें कुछ धर्म, राजनीतिक, अर्थव्यवस्था व समाजिक दृष्टिकोण से नैतिक व अनैतिक रहे हैं। हाँ उसकी, समझ, अज्ञानता, अशिक्षा का जिम्मेवार भले ही हमारी परम्परा, समाज हो सकता है पर सभी स्थितियों व पक्षों में सभी स्त्रियां एक समान न थी और न है।

कुछ स्त्रियों के प्रति समाज का कुछ भाग रुढ़ रहा है और आज भी है। समाज के परे ढकेल दिये जाने में इन स्त्रियों की परिस्थितियों के प्रति कई कवियों ने अपनी कलम चलायी है। जिस स्त्री को 'वेश्या' कहकर समाज उसे अपने से काटकर अलग कर हीन भावना से देखता है, उसे कीड़े-मकोड़ों की तरह रेंगने पर विवश करता है। मैं पूछती हूं- क्या यह सभ्य व आदर्श समाज उसके बिना रह सकता है। जिस स्त्री को 'वेश्या' की उपमा दी जाती है क्या वो 'वेश्या' की उपाधी स्वयं से पायी है या इन स्त्रियों को वेश्या नाम देने के पीछे पुरुषों का भी कर्म रहा होगा? एक तरफ ये पुरुषसत्ता से लिप्त समाज ऐसी स्त्रियों को समाज से बाहर कर फेंकते हैं वहीं दूसरी तरफ अपनी वासना की आग शांत करने इनके पास जाते हैं, तब ऐसे रुढ़ सोच से ग्रस्त व्यक्ति की इज्जत नहीं जाती। वे समाज के उत्कृष्टम पायदान के कुर्सी पर बैठकर समाज को आदर्शता के कसौटी पर कसते हैं। जिस तरह से जन्म से लेकर मरण तक स्त्रियों की परिस्थितिवश नाम के आगे पीछे परिवर्तन होते आते हैं वजह उसके स्वयं के कर्म होते हैं या सामाजिक परम्परा। जैसे- विवाह पूर्व कुमारी और विवाह बाद 'देवी'। तो फिर ऐसी स्त्रियों को जिसे चमड़े के व्यापार में जबरन ढकेल दिया गया हो या उसकी मजबूरी, बेबसी, भूख के बदले में उसे इस रास्ते को अख्तियार करना पड़ा हो। क्या उसे समाज से काटकर 'वेश्या' नाम देकर उसके प्रति हीन-भाव-भावना रखना उचित है? ऐसी यथा-स्थिति में ये लाईन बिल्कुल सार्थक सिद्ध होती है -

'पेट की भूख उस महिला से पूछो,
जिसकी कीमत अपनी शरीर देकर चुकाई।'

क्या इन परिस्थितियों को देख, समझकर सिर्फ अकेले ऐसी स्त्रियां गुनाह के कठघरे में खड़ी होगी या पुरुष भी होंगे, क्या सिर्फ ऐसी स्त्रियों को 'वेश्या' कहना उचित होगा या उसे एक औरत से वेश्या बनाने में जिनका कर्महस्त

रहा होगा उनका भी कोई नाम होना चाहिए.....? समाज के ऐसे मापदंडों को धूमिल सहस्त्र अस्वीकार करते हुए इन स्त्रियों के प्रति संवेदित हुए 'तुम्हें वेश्या कहते हुए' शीर्षक नामक कविता में लिखते हैं -

"फिर वही अस्फूट ध्वनियां अंधेरी की
फिर वही बटन बंद करती कुलीनता
चकपकाती हुयी गली का मोड़ पार करती है
पुरखों के पुरखों का बलात्कार
ओ पृथ्वी ! तुम्हें वेश्या कहते हुए
मेरे खून में
अपराधियों -सा हाथ उठाए हुए
एक दैत्याकार, दर-ब-दर भटकता है।"[9]

धूमिल एक तरफ जहाँ गाली-गलौज जैसे लोक शब्दों व आंचलिक शब्दों का प्रयोग कर एक तरफ स्त्री-विरोधी दिखलायी पड़ते हैं तो वहीं दूसरी तरफ 'औरत' में पत्नी भी है, मां भी है कहते हुए धूमिल की कविता में अटूट संवेदना भी दिखलायी पड़ती है।

निष्कर्ष : यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि धूमिल स्त्रियों के विरोध यौनांगों को दिखाते हुए वे स्त्रियों को देह तक ही सीमित नहीं रखते बल्कि उससे उपर उठकर उसके कोमल हृदय, संघर्ष व त्याग के आगे संवेदित होकर अपना सर भी झुकाते नजर आते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. संसद से सड़क तक, धूमिल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013, पृष्ठ – 79.
2. धूमिल समग्र, डॉ. रत्नशंकर पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2023, पृष्ठ – 250.
3. संसद से सड़क तक की टीका, डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, नवीन संस्करण, 2012, पृष्ठ- 15.
4. धूमिल समग्र, डॉ. रत्नशंकर पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2023 पृष्ठ-58.
5. वही, पृष्ठ -59.
6. संसद से सड़क तक, धूमिल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013, पृष्ठ-9.
7. धूमिल समग्र, डॉ. रत्नशंकर पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2023 पृष्ठ – 152.
8. वही, पृष्ठ-248.
9. वही, पृष्ठ-525.

•